IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत की समुद्री सुरक्षा : चुनौतियाँ, रणनीतिक आवश्यकताएँ एवं नीतिगत विकल्प

[1]प्रतीक दुबे, [2]डॉ. देवेश चंद्र कटियार

[1]शोधार्थी, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, पी.पी.एन. पी.जी. कॉलेज कानपुर, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर, उ.प्र.

[2]प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, पी.पी.एन. (पी. जी) कॉलेज कानपुर, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर, उ. प्र.

सार

भारत की समुद्री सुरक्षा इसकी राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक लचीलापन, ऊर्जा सुरक्षा और हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में रणनीतिक प्रभाव के केंद्र में है। व्यापक समुद्री हितों, समुद्री व्यापार और ऊर्जा आयात पर निर्भरता और भारत-प्रशांत में बढ़ती भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के साथ, भारत को पारंपरिक और गैर-पारंपरिक समुद्री खतरों के एक जटिल संयोजन का सामना करना पड़ता है। इनमें चीन की बढ़ती नौसैनिक उपस्थिति, उत्तरी हिंद महासागर में लगातार सुरक्षा चिंताएं, आतंकवाद, समुद्री डकैती, अवैध और अनियमित मछली पकड़ना, तस्करी, समुद्री दुर्घटनाएं, तटीय कमजोरियां, साइबर हमले और महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों और चोकपॉइंट्स पर व्यवधान शामिल हैं। इसलिए भारत की समुद्री सुरक्षा रणनीति के लिए नौसेना की तैयारी, तटीय निगरानी, समुद्री डोमेन जागरूकता, तकनीकी आधुनिकीकरण, खुफिया जानकारी साझा करना और क्षेत्रीय सहयोग के संयोजन के साथ एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भारतीय नौसेना की सुरक्षित समुद्र सुनिश्चित करने की रणनीति एक समग्र ढांचे पर जोर देती है जिसमें कई समुद्री हितधारकों और मित्र देशों के साथ सहयोग शामिल है। हाल के घटनाक्रमों ने क्षेत्रीय मंचों पर भारत के नेतृत्व और महासागर दृष्टिकोण सहित सहयोगी समुद्री सुरक्षा तंत्र के महत्व को और उजागर किया है। यह पेपर भारत की समुद्री सुरक्षा के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों की जांच करता है और प्रतिरोध, निगरानी, स्वदेशी जहाज निर्माण, साइबर सुरक्षा, ब्लू-वॉटर क्षमताओं और संचार की समुद्री लाइनों की सुरक्षा से संबंधित प्रमुख रणनीतिक अनिवार्यताओं का मूल्यांकन करता है। यह संपूर्ण सरकारी समन्वय, उन्नत समुद्री डोमेन जागरूकता, मजबूत क्षेत्रीय साझेदारी, लचीले समुद्री बुनियादी ढांचे और बढ़ी हुई तकनीकी आत्मनिर्भरता पर जोर देने वाले नीतिगत विकल्पों का प्रस्ताव करता है। अध्ययन का तर्क है कि भारत को मुख्य रूप से प्रतिक्रियाशील सुरक्षा मुद्रा से एक सक्रिय, नेटवर्कयुक्त, प्रौद्योगिकी-सक्षम और सहकारी समुद्री सुरक्षा ढांचे की ओर विकसित होना चाहिए जो राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने और पूरे भारत-प्रशांत में स्थिरता में योगदान देने में सक्षम हो।

मुख्य शब्द: *समुद्री सुरक्षा, रणनीतिक, आवश्यकताएँ, नीतिगत*

परिचय

समुद्री सुरक्षा भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास, ऊर्जा सुरक्षा और रणनीतिक कूटनीति का एक महत्वपूर्ण घटक बनकर उभरी है। लगभग 7,500 किलोमीटर की तटरेखा, कई द्वीपों, प्रमुख वाणिज्यिक बंदरगाहों और एक बड़े समुद्री व्यापार नेटवर्क के साथ, भारत हिंद महासागर में एक अद्वितीय भौगोलिक स्थिति रखता है। मात्रा के हिसाब से भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एक बड़ा हिस्सा समुद्री मार्गों के माध्यम से पहुंचाया जाता है, जिससे आर्थिक गतिविधि और ऊर्जा आपूर्ति को बनाए रखने के लिए संचार की समुद्री लाइनों (एसएलओसी) की सुरक्षा आवश्यक हो जाती है। हिंद महासागर एशिया, अफ्रीका, यूरोप और मध्य पूर्व में प्रमुख वैश्विक आर्थिक केंद्रों को भी जोड़ता है, जिससे व्यापक भारत-प्रशांत क्षेत्र में भारत का रणनीतिक महत्व बढ़ जाता है। बदलते भू-राजनीतिक माहौल ने भारत की समुद्री सुरक्षा चिंताओं का दायरा काफी बढ़ा दिया है। नौसैनिक प्रतिस्पर्धा, सैन्य टकराव, क्षेत्रीय विवाद और रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता जैसी पारंपरिक चुनौतियाँ तेजी से गैर-पारंपरिक खतरों के साथ बढ़ रही हैं, जिनमें समुद्री डकैती, समुद्री आतंकवाद, मानव तस्करी, अवैध मछली पकड़ना, नशीली दवाओं की तस्करी, जलवायु संबंधी आपदाएँ, साइबर हमले और महत्वपूर्ण समुद्री बुनियादी ढांचे के लिए खतरे शामिल हैं। अतिरिक्त-क्षेत्रीय शक्तियों, विशेष रूप से चीन की बढ़ती रणनीतिक उपस्थिति ने हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में भारत की सुरक्षा गणना को और तेज कर दिया है। चीन की बढ़ती नौसैनिक क्षमताओं, विदेशी रसद सुविधाओं के विकास और हिंद महासागर के तटीय राज्यों के साथ बढ़ती भागीदारी ने भारत को अपनी समुद्री निगरानी, नौसैनिक तैयारियों और क्षेत्रीय साझेदारी को मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित किया है। भारत की समुद्री सुरक्षा वास्तुकला में भारतीय नौसेना, भारतीय तटरक्षक बल, राज्य समुद्री पुलिस, खुफिया एजेंसियां, बंदरगाह प्राधिकरण और अन्य सरकारी निकाय सहित कई संस्थान शामिल हैं। हालाँकि, समकालीन समुद्री खतरों की जटिलता और परस्पर जुड़ी प्रकृति के लिए इन हितधारकों के बीच अधिक समन्वय की आवश्यकता है। परिणामस्वरूप समुद्री डोमेन जागरूकता (एमडीए) एक महत्वपूर्ण रणनीतिक प्राथमिकता बन गई है। प्रभावी एमडीए में जहाजों, समुद्री गतिविधियों, बुनियादी ढांचे और संभावित खतरों से संबंधित जानकारी का निरंतर संग्रह, एकीकरण, विश्लेषण और प्रसार शामिल है। उपग्रह, तटीय रडार नेटवर्क, स्वचालित पहचान प्रणाली, मानव रहित हवाई वाहन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा विश्लेषण जैसी प्रौद्योगिकियां उभरते समुद्री जोखिमों की पहचान करने और उनका जवाब देने की भारत की क्षमता में काफी सुधार कर सकती हैं।

भारत ने हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (आईओएनएस), सूचना संलयन केंद्र-हिंद महासागर क्षेत्र (आईएफसी-आईओआर), और क्षेत्रीय समुद्री अभ्यास जैसी पहलों के माध्यम से समुद्री सुरक्षा के लिए एक सहयोगी दृष्टिकोण अपनाया है। भारतीय नौसेना की व्यापक समुद्री रणनीति भारत के समुद्री हितों की सुरक्षा, वाणिज्यिक शिपिंग की सुरक्षा और भागीदार देशों के साथ सहयोग पर भी जोर देती है। भारत के SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) दृष्टिकोण ने हिंद महासागर में एक खुले, समावेशी, सुरक्षित और नियम-आधारित समुद्री वातावरण को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण राजनयिक ढांचा प्रदान किया है। एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम भारत के समुद्री आर्थिक बुनियादी ढांचे की सुरक्षा है। बंदरगाह, अपतटीय ऊर्जा प्रतिष्ठान, समुद्र के नीचे संचार केबल, शिपिंग नेटवर्क, मत्स्य पालन और तटीय औद्योगिक क्षेत्र तेजी से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण घटक बन रहे हैं। इन संपत्तियों में व्यवधान, चाहे भौतिक हमलों, साइबर घटनाओं, दुर्घटनाओं या भू-राजनीतिक संकटों के माध्यम से हो, महत्वपूर्ण आर्थिक और रणनीतिक परिणाम उत्पन्न कर सकता है। नतीजतन, समुद्री सुरक्षा को अब केवल नौसैनिक युद्ध के चश्मे से नहीं देखा जा सकता है; इसमें आर्थिक सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, पर्यावरण सुरक्षा, आपदा प्रबंधन और तटीय सामुदायिक लचीलापन भी शामिल होना चाहिए। भारत की समुद्री सुरक्षा का एक मजबूत स्वदेशी आयाम भी है। घरेलू जहाज निर्माण, नौसैनिक प्रौद्योगिकियों, मानव रहित प्रणालियों, समुद्री सेंसर, संचार नेटवर्क और रक्षा विनिर्माण को मजबूत करने से बाहरी निर्भरता कम हो सकती है और रणनीतिक स्वायत्तता बढ़ सकती है। इसलिए आत्मनिर्भर भारत के व्यापक ढांचे के तहत स्वदेशी प्लेटफार्मों और प्रौद्योगिकियों का विकास समुद्री रक्षा तैयारियों के लिए तेजी से प्रासंगिक हो गया है। इस पृष्ठभूमि के खिलाफ, वर्तमान अध्ययन भारत की समुद्री सुरक्षा: चुनौतियां, रणनीतिक अनिवार्यताएं और नीति विकल्पों की जांच करता है। यह भारत के समुद्री हितों के सामने आने वाले प्रमुख पारंपरिक और गैर-पारंपरिक खतरों पर ध्यान केंद्रित करता है, मौजूदा संस्थागत और रणनीतिक प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन करता है, और समुद्री तैयारियों को मजबूत करने के लिए नीतिगत उपायों की पहचान करता है। अध्ययन का तर्क है कि भारत को एक व्यापक, एकीकृत, प्रौद्योगिकी-

संचालित और सहकारी समुद्री सुरक्षा ढांचे की आवश्यकता है जो तटीय सुरक्षा, समुद्री डोमेन जागरूकता, स्वदेशी तकनीकी क्षमताओं, लचीले बुनियादी ढांचे और हिंद महासागर और भारत-प्रशांत देशों के साथ मजबूत साझेदारी के साथ विश्वसनीय नौसैनिक निरोध को जोड़ती है।

भारत का समुद्री भूगोल और सामरिक महत्व

भारत की भौगोलिक स्थिति इसे हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) में केंद्रीय भूमिका प्रदान करती है। देश की मुख्य भूमि और द्वीप क्षेत्रों सहित लगभग 7,516.6 किमी लंबी तटरेखा है, और यह मध्य पूर्व, अफ्रीका, दक्षिण पूर्व एशिया और पूर्वी एशिया को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों से घिरा हुआ है। भारत में 12 प्रमुख बंदरगाह और कई गैर-प्रमुख बंदरगाह भी हैं जो घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य का समर्थन करते हैं। मात्रा के हिसाब से भारत का 90 % से अधिक व्यापार समुद्री मार्गों से होता है, जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए संचार की सुरक्षित समुद्री लाइनों के महत्व को दर्शाता है। हिंद महासागर भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि कच्चे तेल और अन्य ऊर्जा संसाधनों का एक बड़ा हिस्सा समुद्री मार्गों के माध्यम से आयात किया जाता है। नतीजतन, संघर्ष, समुद्री डकैती, आतंकवाद, भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता या दुर्घटनाओं के कारण होने वाला कोई भी व्यवधान सीधे भारत के व्यापार, ऊर्जा आपूर्ति और आर्थिक स्थिरता को प्रभावित कर सकता है।

समुद्री व्यापार और आर्थिक सुरक्षा

भारत का समुद्री क्षेत्र आर्थिक विकास और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से निकटता से जुड़ा हुआ है। भारतीय बंदरगाह देश के बाहरी व्यापारिक व्यापार का एक बड़ा हिस्सा संभालते हैं, जबकि शिपिंग प्रमुख वैश्विक बाजारों के साथ कनेक्टिविटी प्रदान करता है। पेट्रोलियम, कच्चा तेल, कोयला, लौह अयस्क, उर्वरक, मशीनरी और कंटेनरीकृत सामान समुद्री मार्गों के माध्यम से परिवहन की जाने वाली महत्वपूर्ण वस्तुओं में से हैं। समुद्री वाणिज्य की बढ़ती मात्रा और जटिलता ने सुरक्षित बंदरगाहों, कुशल शिपिंग मार्गों, तटीय बुनियादी ढांचे और निर्बाध एसएलओसी के लिए एक समान आवश्यकता पैदा कर दी है। इसलिए समुद्री आर्थिक सुरक्षा नौसैनिक संपत्तियों की सुरक्षा से परे फैली हुई है और इसमें बंदरगाहों, अपतटीय प्रतिष्ठानों, शिपिंग कंपनियों, रसद नेटवर्क, संचार प्रणालियों और समुद्र के नीचे के बुनियादी ढांचे की सुरक्षा शामिल है।

प्रमुख पारंपरिक समुद्री सुरक्षा चुनौतियाँ

पारंपरिक समुद्री सुरक्षा चुनौतियों में मुख्य रूप से सैन्य प्रतिस्पर्धा, नौसेना आधुनिकीकरण, क्षेत्रीय विवाद, रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता और समुद्र में संभावित संघर्ष शामिल हैं। भारत को विशेष रूप से जटिल रणनीतिक माहौल का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि हिंद महासागर क्षेत्रीय और अतिरिक्त-क्षेत्रीय शक्तियों के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र बन गया है। चीन द्वारा नौसैनिक क्षमताओं के विस्तार और हिंद महासागर के देशों के साथ उसके बढ़ते जुड़ाव का भारत की रणनीतिक योजना पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। विदेशी नौसैनिक जहाजों की उपस्थिति और समुद्री प्रभाव के लिए बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण भारत को विश्वसनीय निरोध और पर्याप्त निगरानी और प्रतिक्रिया क्षमता बनाए रखने की आवश्यकता है। साथ ही, भारत को पारंपरिक सैन्य खतरों के खिलाफ अपने द्वीप क्षेत्रों, अपतटीय संपत्तियों, तटीय प्रतिष्ठानों और प्रमुख शिपिंग मार्गों की रक्षा करनी चाहिए।

गैर-पारंपरिक समुद्री सुरक्षा खतरे

भारत का समुद्री सुरक्षा वातावरण कई प्रकार के गैर-पारंपरिक खतरों से भी प्रभावित है। इनमें समुद्री डकैती, समुद्री आतंकवाद, अवैध मछली पकड़ना, मादक पदार्थों की तस्करी, मानव तस्करी, हथियारों की तस्करी, प्रदूषण, प्राकृतिक आपदाएँ और समुद्री दुर्घटनाएँ शामिल हैं। ऐसे खतरों को प्रबंधित करना कठिन होता है क्योंकि वे अक्सर राष्ट्रीय सीमाओं को पार करते हैं और इसमें राज्य और गैर-राज्य दोनों अभिनेता शामिल होते हैं। अवैध, असूचित और अनियमित मछली पकड़ने से समुद्री संसाधनों और तटीय समुदायों की आजीविका पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, जबकि तस्करी नेटवर्क दवाओं, हथियारों और लोगों की आवाजाही के लिए समुद्री मार्गों का फायदा उठा सकते हैं। जलवायु परिवर्तन और चरम मौसम की घटनाओं से तटीय आबादी, बंदरगाहों, मत्स्य पालन और समुद्री बुनियादी ढांचे के लिए जोखिम

और बढ़ जाता है। इन चुनौतियों के लिए नौसेना, तटरक्षक बल, समुद्री पुलिस, ख़ुफ़िया एजेंसियों, सीमा शुल्क अधिकारियों और अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों को शामिल करते हुए समन्वित प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता है।

समुद्री डोमेन जागरूकता और निगरानी

समुद्री डोमेन जागरूकता (एमडीए) भारत की समुद्री सुरक्षा वास्तुकला के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक बन गया है। एमडीए अधिकारियों को जहाजों की निगरानी करने, असामान्य समुद्री गतिविधियों की पहचान करने, संभावित खतरों को ट्रैक करने और समुद्री पर्यावरण की एक व्यापक परिचालन तस्वीर विकसित करने में सक्षम बनाता है। भारत ने तटीय रडार स्टेशनों, उपग्रह-आधारित निगरानी, स्वचालित पहचान प्रणाली (एआईएस) डेटा, विमान, मानव रहित प्रणाली और सूचना-साझाकरण तंत्र के माध्यम से अपनी निगरानी क्षमताओं को मजबूत किया है। सूचना संलयन केंद्र-हिंद महासागर क्षेत्र (आईएफसी-आईओआर) ने भागीदार देशों के साथ सूचना साझा करने और समन्वय का समर्थन किया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, सैटेलाइट इमेजरी और वास्तविक समय विश्लेषण के व्यापक एकीकरण से संदिग्ध जहाजों का पता लगाने और उभरते समुद्री खतरों की भविष्यवाणी करने की भारत की क्षमता में सुधार हो सकता है।

तटीय सुरक्षा और द्वीप क्षेत्र

तटीय सुरक्षा भारत की समुद्री सुरक्षा नीति के एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम का प्रतिनिधित्व करती है। व्यापक समुद्र तट और असंख्य मछली पकड़ने वाले समुदाय पर्याप्त निगरानी और प्रवर्तन आवश्यकताएँ पैदा करते हैं। 2008 के मुंबई आतंकवादी हमलों ने भारत के तटीय क्षेत्रों की संवेदनशीलता को प्रदर्शित किया और समुद्री सुरक्षा एजेंसियों के बीच मजबूत समन्वय की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। जवाब में, भारत ने तटीय निगरानी को मजबूत किया, भारतीय तट रक्षक की भूमिका का विस्तार किया, तटीय रडार कवरेज में सुधार किया, और केंद्रीय और राज्य अधिकारियों के बीच अधिक समन्वय के लिए तंत्र विकसित किया। भारत के द्वीप क्षेत्र, विशेष रूप से अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, मलक्का जलडमरूमध्य की ओर जाने वाले महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों के निकट होने के कारण भी प्रमुख रणनीतिक महत्व रखते हैं। इसलिए समुद्री जागरूकता और रणनीतिक पहुंच बनाए रखने के लिए इन क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे, निगरानी, लॉजिस्टिक्स और रक्षा क्षमताओं को मजबूत करना महत्वपूर्ण है।

चीन और बदलता सामरिक वातावरण

चीन की बढ़ती समुद्री क्षमताएं और गतिविधियां भारत की समकालीन समुद्री सुरक्षा गणना में एक महत्वपूर्ण कारक हैं। चीन ने तेजी से आधुनिकीकरण करने वाली नौसेना विकसित की है, हिंद महासागर में अपनी उपस्थिति का विस्तार किया है और क्षेत्र के कई देशों के साथ आर्थिक और बुनियादी ढांचे के संबंधों को मजबूत किया है। इसलिए भारत को क्षेत्रीय राजनयिक जुड़ाव के साथ रणनीतिक प्रतिस्पर्धा को संतुलित करने की चुनौती का सामना करना पड़ता है। भारत की प्रतिक्रिया में नौसैनिक क्षमताओं को मजबूत करना, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस और हिंद महासागर के तटीय देशों जैसे देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी विकसित करना और बहुपक्षीय समुद्री अभ्यास में भाग लेना शामिल है। इसका उद्देश्य केवल सैन्य संतुलन नहीं है बल्कि एक स्थिर, खुला, समावेशी और नियम-आधारित समुद्री वातावरण बनाना भी है।

स्वदेशी रक्षा उत्पादन और तकनीकी आधुनिकीकरण

भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए तकनीकी आत्मनिर्भरता लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। आधुनिक नौसैनिक युद्ध और समुद्री निगरानी उन्नत सेंसर, उपग्रह, मानव रहित हवाई और पानी के नीचे प्रणाली, सुरक्षित संचार, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, साइबर क्षमताओं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सटीक हथियारों पर निर्भर करती है। परिणामस्वरूप, भारत ने आत्मनिर्भर भारत से जुड़ी पहलों के माध्यम से स्वदेशी जहाज निर्माण और रक्षा उत्पादन पर जोर दिया है। स्वदेशी विमान वाहक, पनडुब्बियों, विध्वंसक, फ्रिगेट्स, गश्ती जहाजों, निगरानी प्रणालियों और समुद्री प्रौद्योगिकियों के विकास और समावेशन से विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता कम हो सकती है और रणनीतिक स्वायत्तता मजबूत हो सकती है। घरेलू अनुसंधान

और विकास में अधिक निवेश भी भारत को उभरती प्रौद्योगिकियों और अपरंपरागत समुद्री खतरों का अधिक प्रभावी ढंग से जवाब देने में सक्षम बना सकता है।

समुद्री साइबर सुरक्षा और महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचा

बंदरगाहों, शिपिंग, लॉजिस्टिक्स, नेविगेशन और समुद्री संचार के बढ़ते डिजिटलीकरण ने साइबर सुरक्षा जोखिमों की एक नई श्रेणी बनाई है। बंदरगाह-प्रबंधन प्रणालियों, पोत-नेविगेशन प्रणालियों, शिपिंग कंपनियों, उपग्रह संचार और समुद्री डेटाबेस के खिलाफ साइबर हमले पारंपरिक भौतिक हमले की आवश्यकता के बिना वाणिज्यिक गतिविधि को बाधित कर सकते हैं। समुद्र के अंदर संचार केबल विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे वैश्विक डिजिटल संचार का एक बड़ा हिस्सा ले जाते हैं। इसलिए भारत को मजबूत समुद्री साइबर-जोखिम मूल्यांकन, सुरक्षित संचार नेटवर्क, नियमित सुरक्षा ऑडिट, घटना-प्रतिक्रिया तंत्र और सरकारी एजेंसियों और निजी समुद्री ऑपरेटरों के बीच सहयोग की आवश्यकता है।

क्षेत्रीय सहयोग एवं सागर

भारत क्षेत्रीय सहयोग को समुद्री सुरक्षा के एक आवश्यक घटक के रूप में देखता है। SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) दृष्टिकोण हिंद महासागर के देशों के बीच सहयोग, क्षमता निर्माण, आपदा प्रतिक्रिया, समुद्री सुरक्षा और सतत विकास पर जोर देता है। भारत समुद्री अभ्यास, मानवीय सहायता और आपदा राहत कार्यों, समुद्री डकैती विरोधी गतिविधियों और सूचना-साझाकरण व्यवस्था में भी योगदान देता है। इस तरह का सहयोग विभिन्न स्तरों की समुद्री क्षमता वाले देशों को सामूहिक रूप से अंतरराष्ट्रीय खतरों से निपटने की अनुमति देता है। छोटे द्वीप और तटीय राज्यों के साथ साझेदारी को मजबूत करने से विश्वास और रणनीतिक स्थिरता का समर्थन करते हुए भारत की क्षेत्रीय समुद्री उपस्थिति में भी सुधार हो सकता है।

भारत के लिए रणनीतिक अनिवार्यताएँ

भारत की समुद्री सुरक्षा रणनीति को बड़े पैमाने पर प्रतिक्रियाशील दृष्टिकोण से सक्रिय, एकीकृत, नेटवर्क-केंद्रित और प्रौद्योगिकी-सक्षम ढांचे की ओर संक्रमण की आवश्यकता है। प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में भारतीय नौसेना और तटरक्षक बल को मजबूत करना, एमडीए में सुधार करना, विशेष आर्थिक क्षेत्र की निगरानी का विस्तार करना, महत्वपूर्ण समुद्री बुनियादी ढांचे की रक्षा करना, स्वदेशी रक्षा उत्पादन में वृद्धि करना, समुद्री साइबर सुरक्षा को मजबूत करना और केंद्रीय और राज्य एजेंसियों के बीच समन्वय में सुधार करना शामिल है। भारत को क्षेत्रीय और अतिरिक्त-क्षेत्रीय शक्तियों के साथ राजनयिक साझेदारी विकसित करने के साथ-साथ हिंद महासागर में निरंतर तैनाती के लिए पर्याप्त रसद और परिचालन क्षमताओं को बनाए रखने की भी आवश्यकता है।

नीति विकल्प

एक व्यापक समुद्री सुरक्षा नीति को पांच प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए: संस्थागत समन्वय, तकनीकी आधुनिकीकरण, स्वदेशी क्षमता, क्षेत्रीय सहयोग और बुनियादी ढांचे का लचीलापन। एक मजबूत संपूर्ण सरकारी तंत्र नौसेना, तटरक्षक बल, खुफिया एजेंसियों, सीमा शुल्क, पुलिस, बंदरगाह अधिकारियों और निजी समुद्री हितधारकों के बीच समन्वय में सुधार कर सकता है। उन्नत एआई-सक्षम निगरानी और उपग्रह प्रौद्योगिकियां खतरे का पता लगाने और प्रतिक्रिया में सुधार कर सकती हैं। स्वदेशी जहाज निर्माण और रक्षा अनुसंधान को निरंतर निवेश प्राप्त होना चाहिए, जबकि समुद्री साइबर सुरक्षा को राष्ट्रीय महत्वपूर्ण-बुनियादी ढांचे की सुरक्षा में एकीकृत किया जाना चाहिए। अंत में, भारत को सूचना साझा करने, संयुक्त अभ्यास, क्षमता निर्माण, मानवीय सहायता और समुद्री डकैती और अन्य अंतरराष्ट्रीय खतरों के लिए समन्वित प्रतिक्रियाओं के माध्यम से हिंद महासागर के तटीय देशों के साथ सहयोग को गहरा करना चाहिए।

तालिका 1. भारत की समुद्री सुरक्षा के प्रमुख संकेतक

सूचक	डेटा/स्थिति	सामरिक महत्व
कुल समुद्र तटरेखा	~7,516.6 किमी	विस्तृत समुद्र तटरेखा के कारण तटीय निगरानी और सुरक्षा की आवश्यकताएँ बढ़ जाती हैं।
प्रमुख बंदरगाह	12	अंतरराष्ट्रीय व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण केंद्र।
समुद्री व्यापार	मात्रा के आधार पर 90% से अधिक व्यापार	सुरक्षित समुद्री मार्गों पर भारत की मजबूत निर्भरता को दर्शाता है।
विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ)	~2.37 मिलियन वर्ग किमी	व्यापक समुद्री निगरानी तथा समुद्री संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता।
द्वीपीय क्षेत्र	अंडमान एवं निकोबार तथा लक्षद्वीप	हिंद महासागर में रणनीतिक पहुँच और निगरानी क्षमता को बढ़ाते हैं।
हिंद महासागर में रणनीतिक स्थिति	मध्य पूर्व, अफ्रीका और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच केंद्रीय स्थिति	भारत को एक प्रमुख क्षेत्रीय समुद्री सुरक्षा प्रदाता के रूप में स्थापित करने में सहायक।
प्रमुख समुद्री खतरे	समुद्री डकैती, आतंकवाद, तस्करी, अवैध मत्स्यन और साइबर खतरे	पारंपरिक तथा गैर-पारंपरिक सुरक्षा उपायों के एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता।
समुद्री क्षेत्र जागरूकता (MDA)	तटीय रडार, AIS, उपग्रह, विमान तथा IFC-IOR	वास्तविक समय में निगरानी और संभावित खतरों की शीघ्र पहचान में सहायक।
क्षेत्रीय समुद्री सुरक्षा सहयोग	SAGAR, IONS, IFC-IOR तथा संयुक्त अभ्यास	सामूहिक समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय विश्वास को मजबूत करता है।
स्वदेशी समुद्री क्षमता	घरेलू जहाज निर्माण और रक्षा उत्पादन में वृद्धि	रणनीतिक स्वायत्तता को बढ़ावा देती है तथा विदेशी निर्भरता को कम करती है।

तालिका 1 दर्शाती है कि भारत की समुद्री सुरक्षा आवश्यकताएँ इसकी भौगोलिक स्थिति, समुद्री व्यापार पर आर्थिक निर्भरता, व्यापक ईईजेड और रणनीतिक द्वीप क्षेत्रों से निकटता से जुड़ी हुई हैं। लंबी तटरेखा, बड़े समुद्री क्षेत्र और सुरक्षित समुद्री मार्गों पर निर्भरता का संयोजन महत्वपूर्ण निगरानी और रक्षा जिम्मेदारियां बनाता है। साथ ही, समुद्री डकैती, आतंकवाद, तस्करी, अवैध मछली पकड़ने और साइबर खतरों की उपस्थिति से पता चलता है कि समुद्री सुरक्षा को केवल नौसैनिक क्षमताओं के माध्यम से संबोधित नहीं किया जा सकता है। इसलिए भारत के समुद्री हितों की रक्षा के लिए समुद्री क्षेत्र जागरूकता, तटीय निगरानी, तकनीकी आधुनिकीकरण, स्वदेशी रक्षा उत्पादन और क्षेत्रीय सहयोग को मिलाकर एक एकीकृत ढांचा आवश्यक है।

निष्कर्ष

भारत की समुद्री सुरक्षा इसकी राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास, ऊर्जा सुरक्षा और भारत-प्रशांत में रणनीतिक प्रभाव का एक अनिवार्य घटक बन गई है। देश की व्यापक तटरेखा, बड़े विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र, द्वीप क्षेत्र, समुद्री व्यापार पर निर्भरता और हिंद महासागर में रणनीतिक स्थान महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं लेकिन भारत को विविध सुरक्षा चुनौतियों का सामना भी करते हैं। नौसैनिक प्रतिस्पर्धा और भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता जैसे पारंपरिक खतरे तेजी से गैर-पारंपरिक खतरों के साथ ओवरलैप हो रहे हैं, जिनमें समुद्री डकैती, समुद्री आतंकवाद, अवैध मछली पकड़ने, तस्करी, साइबर हमले, पर्यावरणीय खतरे और महत्वपूर्ण समुद्री बुनियादी ढांचे के लिए जोखिम शामिल हैं। विश्लेषण से संकेत मिलता है

कि भारत ने भारतीय नौसेना और तटरक्षक बल के आधुनिकीकरण, तटीय निगरानी प्रणालियों, समुद्री डोमेन जागरूकता, सूचना-साझाकरण तंत्र, स्वदेशी जहाज निर्माण और क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से अपनी समुद्री सुरक्षा वास्तुकला को मजबूत करने में पर्याप्त प्रगति की है। SAGAR और सूचना संलयन केंद्र-हिंद महासागर क्षेत्र जैसी पहलों ने समुद्री भागीदारों के साथ सहयोग करने और क्षेत्रीय स्थिरता में योगदान करने की भारत की क्षमता को बढ़ाया है। फिर भी, उभरती तकनीकी और भू-राजनीतिक चुनौतियों के लिए मौजूदा सुरक्षा तंत्रों के निरंतर अनुकूलन की आवश्यकता है। इसलिए भारत की भविष्य की समुद्री रणनीति में एकीकृत संपूर्ण सरकार और संपूर्ण क्षेत्र दृष्टिकोण पर जोर दिया जाना चाहिए। समय पर खतरे की पहचान और प्रतिक्रिया के लिए नौसेना, तटरक्षक बल, खुफिया एजेंसियों, समुद्री पुलिस, बंदरगाह अधिकारियों और निजी समुद्री हितधारकों के बीच बेहतर समन्वय आवश्यक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उपग्रह निगरानी, स्वायत्त प्रणाली, साइबर सुरक्षा, सुरक्षित संचार और स्वदेशी रक्षा प्रौद्योगिकियों में निवेश को मजबूत किया जाना चाहिए। बंदरगाहों, अपतटीय ऊर्जा सुविधाओं, समुद्र के नीचे संचार केबलों, शिपिंग मार्गों और द्वीप क्षेत्रों की सुरक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। क्षेत्रीय सहयोग भी उतना ही महत्वपूर्ण रहेगा। भारत हिंद महासागर के तटीय राज्यों और अन्य रणनीतिक भागीदारों के साथ सूचना साझाकरण, संयुक्त अभ्यास, क्षमता निर्माण, मानवीय सहायता, आपदा-प्रतिक्रिया सहयोग और समुद्री डकैती विरोधी पहल का विस्तार करके समुद्री स्थिरता को मजबूत कर सकता है। इस तरह के सहयोग से उन खतरों से निपटने में मदद मिल सकती है जिन्हें किसी एक देश द्वारा प्रभावी ढंग से प्रबंधित नहीं किया जा सकता है।

संदर्भ

1. भारतीय नौसेना. (2015)। सुरक्षित समुद्र सुनिश्चित करना: भारतीय समुद्री सुरक्षा रणनीति। एकीकृत मुख्यालय, रक्षा मंत्रालय (नौसेना)।
2. भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय। (2024)। वार्षिक रिपोर्ट 2023-24। रक्षा मंत्रालय।
3. भारत सरकार, बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय। (2024)। वार्षिक रिपोर्ट 2023-24। भारत सरकार.
4. भारतीय तट रक्षक। (2024)। वार्षिक रिपोर्ट 2023-24। रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
5. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। (2015)। सागर: क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास। भारत सरकार.
6. टिल, जी. (2018)। समुद्री शक्ति: इक्कीसवीं सदी के लिए एक मार्गदर्शिका (चौथा संस्करण)। रूटलेज।
7. ब्रूस्टर, डी. (2014)। भारत का महासागर: क्षेत्रीय नेतृत्व के लिए भारत की कोशिश की कहानी। रूटलेज। https://doi.org/10.4324/9781315734900
8. कपलान, आर.डी. (2010)। मानसून: हिंद महासागर और इक्कीसवीं सदी में वर्चस्व की लड़ाई। आकस्मिक घर।
9. ब्रूस्टर, डी. (2016)। समुद्र में भारत और चीन: हिंद महासागर में नौसैनिक प्रभुत्व के लिए प्रतिस्पर्धा। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. बरूआ, डी.एम. (2020)। इंडो-पैसिफिक में भारत: नई दिल्ली का वैश्विक दृष्टिकोण। वाशिंगटन त्रैमासिक, 43(2), 91-113। https://doi.org/10.1080/0163660X.2020.1770110
11. स्कॉट, डी. (2013)। हिंद महासागर की समुद्री सुरक्षा में भारत की भूमिका। हिंद महासागर क्षेत्र का जर्नल, 9(2), 138-154। https://doi.org/10.1080/19480881.2013.833929
12. ब्रूस्टर, डी. (2015)। भारत का महासागर: क्षेत्रीय नेतृत्व के लिए भारत की कोशिश की कहानी। रूटलेज।
13. राष्ट्रीय समुद्री फाउंडेशन। (2023)। भारत की समुद्री सुरक्षा और इंडो-पैसिफिक। राष्ट्रीय समुद्री फाउंडेशन, नई दिल्ली।
14. अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन। (2023)। समुद्री सुरक्षा और समुद्री डकैती. अंतर्राष्ट्रीय मैरिटाइम संगठन।
15. व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन। (2024)। समुद्री परिवहन की समीक्षा 2024. संयुक्त राष्ट्र।
16. ड्रग्स और अपराध पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय। (2024)। हिंद महासागर में समुद्री अपराध और समुद्री डकैती। ड्रग्स और अपराध पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय।